"वास्तविक समस्या यह नहीं है कि मशीनें सोचती हैं या नहीं बल्कि यह है कि मनुष्य सोचते हैं या नहीं।

रोबोट 2.0 मूवी में

जब रजनीकांत का रोबोट मानवीय भावों व सोच समझ को ग्रहण कर लेता है तो उसे मानव जाति पर खतरे के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। मूवीज़ के माध्यम से शुरु हुआ यह विचार आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ व्यापक रूप से जुड़ गया है कि वास्तविक त्रासदी उस दिन शुरु होगी जब मशीनें सोचना शुरु कर देंगी।

अगर हम इस विषय में

भूमिका की मांग अनुरूप भूमिका को और संतुलित बनाएं।

शुरुआती प्रसंग उदाहरण सही उद्धरण सही

विचार करें तो यह मिलेगा कि बिल्कुल त्रासदी तो होगी जब मशीनें सोचने लगेंगी तथा इंसान सोचना बंद कर देंगे।

इस विषय पर इस भ्रांति को दूर किया जाना आवश्यक है कि वास्तव में वह मनुष्य नहीं है जिसका सोचना - समझना महत्व रखता है। तथा जो खुद आज इसी सोच का गुलाम बन गया है कि उसके द्वारा बनाई गई मशीनें उससे बेहतर सोच सकती है।

चर्चा की शुरुआत इस 'सोचना' शब्द की एक समझ बनाकर की जा सकती है। सोचना से तात्पर्य किसी विषय, परिस्थिती,

भावार्थ लेखन में और तार्किकता लाएँ

मनुष्यों के सं. के संदर्भ में न सोचने के औचित्य को स्पष्ट करें

वस्तु पर अपनी क्षमता व ज्ञान के आधार पर विचार करने से तथा उस संबंध में कुछ नवाचार करने से है, जैसे- मनुष्य का यह सोचना कि मृत्यु दंड सही है या गलत ?

अब यदि मानव व मशीन के सोचने की क्षमता की तुलना करें तो चीजें स्पष्ट होने लगेंगी मानव सोचता है बचपन से प्राप्त शिक्षा, ज्ञान, अनुभवों, अंतरात्मा आदि के आधार पर अतः उसकी सोच का दायरा अंतरिक्ष से समुद्र की गहराई तक अनंत है ; पर मशीनें सोचती हैं उस डाटा की मदद से जो उन्हें प्रदान किया गया है, अतः यह

उस डाटा की विविधता तक सीमित है, जैसे- कोयला खनन में लगा रोबोट केवल कोयले की ही पहचान कर पायेगा।

कुछ उदाहरण तथा Robotics Based आधुनिक सेना तथा चिकित्सा के अनुप्रयोग, विकसित देशों द्वारा AI, शोध की चर्चा करें

अब यदि इस विषय पर विचार करें कि मशीनों का सोचना वास्तविक समस्या क्यूं नहीं है, तो इसका सीधा उत्तर होगा क्यूंकि मशीनें, मानव की सोच से ही उपजी हैं तथा मानव द्वारा दिए गए डाटा, पैटर्न आदि के आधार पर मशीन लर्निंग कर सोचने की क्षमता विकसित करती हैं।

वह मानव ही है जो कम से कम वर्तमान में तो

इनकी सोच का आधार है; जैसे - अमेरिका में कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता साफ्टवेयरों द्वारा नस्लवादी उत्तर देना, यह बताता है कि मानवीय सोच के आधार पर ही उनकी सोचने की क्षमता का विकास किया जाएगा।

तो फिर अब मशीनों का सोचना वास्तविक समस्या नहीं है, तो क्या है? वह मानव का सोचना है। मानव सोचेगा तो व्यापार करेगा, समस्याएं दूर करेगा और अंततः दुनिया में बदलाव लाएगा; पर वह सोचना ही बंद कर दे तो? तो हम बुद्धिवादी होते जाएंगे, हम पिछड़ते जाएंगे और फिर मशीनों की सोच भी कुछ नहीं कर सकेगी।

निष्पकर्ष के मांग अनुसार व्याख्या की दिया है।

मानव का सोचते रहना कितना जरूरी यह इतिहास में भरे पड़े उदाहरणों से समझा जा सकता है। यदि राजा राममोहन राय यह नहीं सोच पाते कि सामाजिक कुरीतियाँ (जातिवाद, लैंगिक असमानता) व धार्मिक पाखंड, राष्ट्रीय एकता हेतु खतरा हैं तो न तो भारत में व्यापक सामाजिक सुधार (जैसे - सती का अंत) होते न ही देश में राष्ट्रीयता की भावना का संचार होता।

इसी प्रकार यदि रूसो, वाल्टेयर, मांटेस्क्यू की सोच ने एक जनकेंद्रित शासन के स्वरूप की कल्पना न की होती

शीर्षक के साथ-साथ अप्रासंगिक उदाहरण

तो संभवतः 'जनता द्वारा, जनता का व जनता के लिए' लोकतंत्र, आज हमारे सामने नहीं होता। न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण, एडीसन का बल्ब, चरक व सुश्रुत की चिकित्सा पद्धतियां मानव की सोच के उस चरम को प्रदर्शित करती हैं जो एक बेहतर विश्व हेतु अत्यंत आवश्यक है।

तो जब मनुष्य का सोचना या न सोचना ही सबसे महत्वपूर्ण है तो मनुष्य सोचता क्यूं नहीं है? क्यूं इतने वर्षों तक किसी ने उड़ते पक्षी को देखकर नहीं सोचा था कि हम भी उड़ सकते हैं? इसके कारण कई हैं। पहला तो सोचने के लिए आधारभूत चीजों

का ही न होना, जैसे - शिक्षा तक विश्व में हमेशा पहुँच सीमित रही है। भारत की 20% जनसंख्या आज भी निरक्षर है।

अन्य कारणों में

सोचने की जरूरत का न होना या प्रचलित रूढ़िवादी तंत्र द्वारा सोच का दमन कर दिया जाना है। ब्रूनो की हत्या मध्यकालीन यूरोपीय चर्चों द्वारा यह कथन थी कि हमारे सिद्धांतों के विरुद्ध तर्क - वितर्क करने की आवश्यकता नहीं है।

इन सभी पक्षों पर चर्चा के बाद यदि हम वर्तमान समय पर आएं तो यहां दो और जटिलताएं देखने को मिलती हैं।

पहली मशीनों के सोचने या

शिक्षा की व्याख्या के संदर्भ में

न सोचने का वास्तविक समस्या बनते जाना तथा दूसरी मानव का अपनी सोचने की क्षमता का महत्व भूलते जाना।

पहली समस्या में मशीनें, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भावनात्मक पक्ष का जुड़ जाना, जिससे वो धरती की चीजों के प्रति जुड़ाव महसूस करने लगेंगे एक समस्या हो सकती है, जैसे- एक मशीन को किसी व्यक्ति से प्यार हो जाएगा, तो वह बचपन से नैतिक शिक्षा नहीं प्राप्त की होगी, इसलिए मशीन सामने वाले व्यक्ति की भावनाओं व पसंद का सम्मान नहीं कर पाएगी।

मशीनें निर्धारित आदेश अनुसार व्यवहार करती हैं।

दूसरा पक्ष, मानव द्वारा सोचने की क्षमता का बाह्यस्त्रोतन (आउटसोर्सिंग)

है। लेखक को कैरेट सोचना नहीं है,
कंपनी को विज्ञापन बनाने के लिए
लोग नहीं चाहिए, नेताओं को दिमाग
लगाकर घोषणापत्र नहीं बनाने हैं,
शिक्षकों को बच्चों के सवालों पर कुछ
सोच-विचार नहीं करना है; सब
कुछ चैट जीपीटी कर देगा।

इस संपूर्ण चर्चा का सार
ये है कि भले ही यह तथ्य
जटिलता भरा हो, कि मशीनों का
सोचना समस्या है या नहीं;
पर यह स्पष्ट है कि मानव का
सोचते रहना, इस दुनिया का चलते
रहना है, जिससे समझौता नहीं

किया जा सकता। इसलिए वर्तमान में खत्म होते जा रहे मानवीय मस्तिष्क के महत्व को पुनः स्थापित करने की जरूरत है; तथा इस पीढ़ी को कवि वैरागी का यह संदेश देने की जरूरत है-

"अब चिंतन पर काई जम जाए,
विप्लव की भांवर थम जाए।
तो समझो पीढ़ी हार गई,
पुरवा को पछुआ मार गई।"

व्याख्या की दिशा और स्टीकता लाएं।

45/125

"साहित्य केवल ज्ञान का ही स्रोत नहीं है; बल्कि नैतिक व सामाजिक क्रिया का भी रूप है।"

"अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है। मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।"

साहित्य का महत्व अगर सिर्फ दो शब्दों में लिखना हो, तो वह यही होगा कि इसका न होना किसी देश या समाज के मृत होने की भांति है। साहित्य है तो चिंतन है, साहित्य है तो सत्य है, साहित्य है तो जनता की आवाज है।

Good

साहित्य के महत्ता को और विस्तार में दर्शाए

इस कथन में यदि विभिन्न प्रश्नों पर चर्चा करें, तो सर्वप्रथम हमें समझना होगा कि साहित्य क्या होता है? ज्ञान के स्रोत के रूप में, नैतिक व सामाजिक क्रिया के रूप में इसकी क्या भूमिका है? तथा वर्तमान युग में साहित्य क्या इन कसौटियों पर खरा उतरता है?

सर्वप्रथम साहित्य क्या है?

साहित्य से तात्पर्य एक ऐसी रचना से है जो 'स हित' यानि समाज के हित की भावना रखती हो। इसके साथ ही साहित्य में एक विशेषता इसमें रमणीयता या सुंदरता

व्याख्या
सटीक
८६

का पाया जाना भी होती है। साहित्य, न तो आम बोलचाल है, जहाँ व्यक्ति के अर्थ का महत्व शब्द से ज्यादा होता है, न ही यह शास्त्र है जहां सारी सत्ता शब्द की ही होती है; साहित्य में शब्द व अर्थ की महत्व हेतु प्रतिस्पर्धा होती है।

अब यदि हम साहित्य की ज्ञान के स्रोत के रूप में भूमिका का आकलन करें तो यह दो प्रकार से हमारे लिए ज्ञान का स्रोत है।

प्रथम - साहित्य का अध्ययन करने से हमें उस समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ~~परिस्थितियों~~ परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त

साहित्य
|
ज्ञानात्मक
का ...

होती है। जैसे- गोदान उपन्यास का अध्ययन हमारा, 1930 के दशक में भारतीय किसानों की समस्या, जाति व्यवस्था, मजदूरों की स्थिति, धर्म के प्रभाव, लोकतंत्र की स्थिति आदि; सभी समस्याओं पर ज्ञानवर्द्धन करता है, तथा यदि रचना अपने समय का अतिक्रमण कर सार्वकालिक हो जाए तो यह हमें हमारे समय की जानकारी भी देती है, जैसा कि गोदान में वर्णित समस्याएं आज भी प्रासंगिक हैं।

Good

इसके अलावा साहित्य का अध्ययन हमें तर्क व सोचने का महत्व बताता है, इससे

हम एक चिंतनशील व्यक्ति बनते हैं जो कि अपने अनुभवों से ज्ञानार्जन करने में सक्षम होते हैं। कबीर इसी अनुभव को "आंखन की देखी" कहते हैं, जिसका महत्व "कागद की लेखी" से ज्यादा है।

साहित्य ज्ञान के स्रोत के अतिरिक्त नैतिक व सामाजिक क्रिया का भी एक रूप है। नैतिक दृष्टि से साहित्य हमें कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप से ऐसी चीजें सिखाता है जिनका पालन नैतिक है। जैसे- रहीम के दोहे व्यक्ति को प्रेम, मित्रता, संतोष आदि मुद्दों पर सीधे नैतिक शिक्षा

साहित्य के द्वारा तत्कालिक समाज की स्थिति के साथ साहित्यिक ज्ञान का भी साहित्य ... है

प्रदान करते हैं, साथ ही अनैतिक वृत्तियों से दूर रहने की सलाह देते हैं - "रहिमन ओछे नरन सों बैर भली न प्रीत
काटे चाटे स्वान के दुहू भाँति विपरीत।"

साथ ही साहित्य, अप्रत्यक्ष रूप से भी हमें नैतिक बनाता है। यह हमारी संवेदनशीलता में वृद्धि करता है, जिससे हम आत्मविश्लेषण कर पाते हैं तथा अनैतिक मूल्यों का त्याग कर पाते हैं। जैसे सिमोन द बाउआ की 'द सेकेंड सेक्स' पढ़ने के बाद हम स्त्रियों को यौन नैतिकता के पैमाने पर नापना बंद कर देते हैं तथा प्रेमचंद की सद्गति कहानी हमारे जातीय पूर्वाग्रहों से मुक्त करती है।

साहित्य, सामाजिक क्रिया का भी एक रूप है; इसका लेखक साहित्य के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाता है, बुराइयों व शोषण पर प्रहार करता है तथा इसका पाठक साहित्य के माध्यम से समाज में अपनी भूमिका समझ पाता है।

कबीर, मध्यकाल में तथा नागार्जुन, आधुनिक काल में दो ऐसे कवि हुए जिन्होंने साहित्य की सामाजिक भूमिका सुनिश्चित की। कबीर ने जाति के दमन व धार्मिक पाखंडों का विरोध कर समाज को प्रेम व भक्ति का मूल्य सिखाया -

"कांकड़ - पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।"

तो नागार्जुन अपनी कविताओं के माध्यम से गरीबी, अकाल, जातिगत हिंसाओं का मुद्दा उठाया साथ ही सत्ता की संवेदनहीनता पर खुलकर तंज कसे -

" हरिजन गिरिजन भूखे नंगे, हम डोले वन-वन में
तुम रेशम की साड़ी डाटे, उड़ती फिरो गगन में।"

स्पष्ट है साहित्य, समाज की आत्मा है जिसका महत्व हर क्षेत्र में है। पर क्या साहित्य हमेशा ऐसी ही भूमिकाएं निभाता है? जवाब है - ना। वीरगाथा काल का रासो साहित्य या रीति काल का दरबारी साहित्य न

तो ज्ञान के स्रोत रहे हैं न ही नैतिक या सामाजिक भूमिका निभाते हैं, वे केवल अपने आराध्य की प्रशंसा व श्रृंगारमूलक प्रेम तक सीमित रहे हैं।

इन सभी पक्षों पर चर्चा के बाद वर्तमान युग के साहित्य की जांच भी जरूरी हो जाती है कि क्या वह अपनी भूमिका का सम्यक निर्वहन कर पाया है? हम जाएंगे एक ओर जहां गीतांजली श्री जैसे साहित्यकार हैं, जो समाज की चेतना को लगातार जाग्रत करने का प्रयास कर रहे हैं; तो दूसरी ओर 'हैरी पाटर' जैसी रचनाओं की लोकप्रियता का होना है जो समाज के मनोरंजन के साहित्य को अपनाने को प्रदर्शित करता है।

साथ ही वर्तमान युग की एक बड़ी समस्या टी.वी, मोबाइल, सिनेमा के कारण दृश्य विधाओं का बढ़ा महत्त्व है जिससे साहित्य के पाठकों की संख्या घटी है। ज्ञान के लिए न्यूज़ चैनल देखना या सोशल मीडिया पर ढूंढ़ लेना (जैसे- गूगल); नैतिक व सामाजिक शिक्षा सिनेमा से प्राप्त करना, अब धीरे- धीरे सामान्य होता जा रहा है।

इसका एक उपाय साहित्य की परिभाषा में विस्तार करना है। आर्टिकल 15, गंगूबाई काठियावाड़ी, जैसी फिल्में जो अपनी नैतिक व सामाजिक भूमिका निभा रही हैं को

इसमें शामिल किया जाए तथा ऐसी फिल्में बनाने को प्रोत्साहित किया जाए।

संपूर्ण चर्चा के बाद हम यह समझ पाए हैं कि साहित्य, किसी व्यक्ति, समाज, देश के लिए कितना महत्वपूर्ण है भले ही यह निरापद न रहा हो। पर वर्तमान में यह एक अस्तित्व संकट का सामना कर रहा है। इसका उपाय नयी पीढ़ी में साहित्य के महत्व की स्थापना है, क्योंकि यदि 'शेक्सपीयर' नहीं होंगे तो कौन नवजागरण को घर-घर पहुंचाएगा तथा दिनकर नहीं होंगे तो "सिंहासन खाली करो कि जनता आती है" जैसे संपूर्ण क्रांति के प्रेरक गीत कहां से आएंगे?

निबंध के अंतिम पद को तात्कालिक उदाहरणों को शामिल कर प्रभावी बनाएं

60/125

निबंध की दिशा अपेक्षाकृत अच्छी है